SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ekuorkokn dh fopkj ;k=k d fofHkUu iMko & ,e-,u-jk; d n'kZu dk lexz eY;kadu

T;kfr noy] (Ph.D.), राजनीति विज्ञान विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
T;kfr noy] (Ph.D.), राजनीति विज्ञान विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/03/2023
Revised on : -----
Accepted on : 23/03/2023
Plagiarism : 01% on 16/03/2023

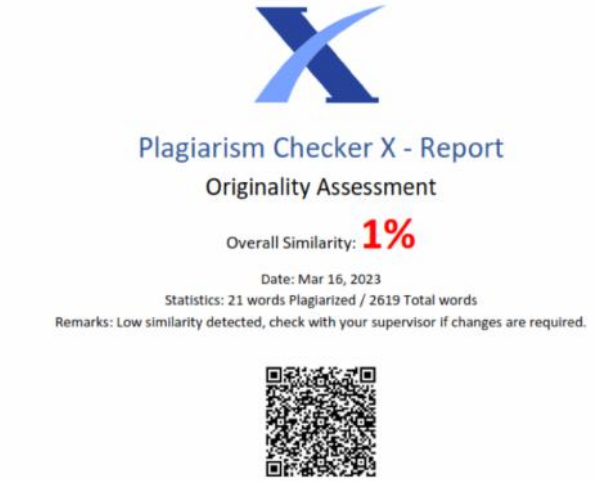

'kks/k lkj

किसी महापुरुष की इस उक्ति से असहमत होना बड़ा कठिन है कि मनुष्य अपने समय का शिशु होता है। 'यहां पर यह एक ऐसा सार्वलौकिक सत्य है', जिससे इन्कार किया जाना लगभग असंभव है। हाँ ऐसा हो सकता है कि कोई विचारधारा, कोई विचार, कोई संदर्भ, कोई घटना अथवा दुर्घटना विचारों को कहीं और मोड़ दे। प्रत्येक विचारक के जीवन में ऐसे मोड़ बड़े स्पष्ट दिखाई देते हैं। मानवेंद्रनाथ राय भी इससे पृथक नहीं है। उनका राजनीतिक चिंतन को सबसे बड़ा योगदान मानवतावाद माना जाता है, और इसमें कोई संदेह भी नहीं कि मार्क्सवाद से प्रभाव तथा विरक्ति दोनों उनके इस दर्शन को स्पर्श करती हैं। अपने शुरुआती दौर में क्रांतिकारी, उसके बाद मार्क्सवाद से अति प्रभावित आगे जाकर मार्क्सवाद से संदेह और फिर स्पष्टतः मानवतावाद का समर्थन उनके राजनीतिक सफर को स्पष्ट करता है।

e[; 'kCn

fopkj ;k=k] ekuorkokn] fopkjèkkjk] ekDlokn] fojfä] lnHk-

किसी भी विचारक का वैचारिक जीवन एक गीत की यात्रा से कम नहीं होता। उसमें आरोह–अवरोह, उतार–चढ़ाव–टकराव, तथा निकटवर्ती अनेक विचारों से सहमति और असहमति के संदर्भ लगातार साथ चलते हैं। इन सभी के बीच अपनी मौलिक चिंतन साधना को साधने का प्रयास आसान नहीं होता। खासतौर से तब, जब मनुष्य की चिंतनशीलता को उसका स्थायी गुण मान लिया गया हो तथा आपके विपरीत स्वर आपकी बहुत नजदीक बहुत ऊंची आवाज में ना सिर्फ गूंज रहे हों बल्कि उन्हें सुना भी जा रहा हो। विचारों से असहमति ने ही संपूर्ण मानव जीवन की विचार यात्रा में अनेक मौलिक

विचार निर्मित किये हैं नयी अवधारणाएं समाज को दी हैं और नेतृत्व की नवीन शैलियों को विकसित किया है, लेकिन इसके समांतर ही यह बताना भी बेहद आवश्यक है कि यह 'प्रतिरोध की यात्राऐं' आसान नहीं होती क्योंकि आप के समांतर ही अनेक विचार यात्राऐं व विचारों की धाराएं बह रही होती हैं जिन्हें मौलिक रूप से परास्त कर उन पर विजय हासिल करना तथा स्वयं को एक स्वीकृत विकल्प के रूप में प्रस्तुति शायद मानव इतिहास का सबसे जटिल कार्य रहा है। एम.एन. राय का जीवन भी ऐसे ही अनुभवों का जीवित दृष्टांत रहा है। उनके संपूर्ण वैचारिक जीवन में अनेक मोड़, संशोधन, समायोजन तथा प्रभाव दिखाई दिए हैं। राजनीति विज्ञान के अन्य विषयों के साथ गहरे संबंध रहे हैं और विभिन्न विद्वानों ने इस विषय पर गंभीर शोध भी किए हैं। पॉल जैनेट के अनुसार ''राजनीति विज्ञान का इन विज्ञानों के साथ गहरा संबंध हैः

1. अर्थशास्त्र के साथ,
2. कानून के साथ, चाहे वह प्राकृतिक हो या संहिताबद्ध जो नागरिकों के पारस्परिक संबंधों का नियमन करता है,
3. इतिहास के साथ जो इसे आवश्यक तथ्य देता है,
4. दर्शनशास्त्र और
5. खास तौर से नीतिशास्त्र के साथ जिससे इसे अपने कुछ सिद्धांत मिलते हैं।''

मनोविज्ञान के अनुसार हमारी प्रत्येक विचार यात्रा में एक विचार तत्व मूलव मौलिक होता है। अर्नेस्ट बार्कर के अनुसार ''मनुष्य के क्रियाकलापों की गुत्थी सुलझाने में मनोवैज्ञानिक संकेतों का उपयोग करना आजकल एक फैशन हो गया है। यदि हमारे पूर्वज जीवन के दृष्टिकोण से सोचते थे तो अब हम मनोवैज्ञानिक ढंग से सोचते हैं।'' यह हमारे प्रत्येक विचार, संदर्भ तथा अनुक्रिया में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्थायी विद्यमान रहता है। एम.एन. राय भी इससे दूर नहीं रहे हैं और उनके संपूर्ण वैचारिक जीवन में मानवतावाद इसी केंद्रीय तत्व के रूप में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मौजूद रहा है। हालांकि उनके विचारों पर तत्कालीन पर्यावरण तथा परिस्थितियों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है, लेकिन फिर भी मानवतावाद कहीं 'प्रत्यक्ष और कहीं परोक्ष' रूप से सदैव उनके विचारों के केंद्रीय तत्व के रूप में विद्यमान रहा है।

''नवमानववाद भावात्मक मनोवेगों के काल्पनिक आधारों पर निर्भर नहीं है। व्यक्ति अपनी बौद्धिकता को नैतिक विकास द्वारा ही प्राप्त करता है।'' अपनें प्रारंभिक जीवन में उन पर क्रांतिकारी विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। यदि हम क्रांतिकारी विचारों की पृष्ठभूमि का विश्लेषण करें तो स्पष्ट पाते हैं कि असमानता की भावना, मानव गरिमा को उचित सम्मान ना मिलना तथा स्वतंत्रता का विशिष्टवर्गीय आवंटन ही क्रांतिकारिता को उत्साहित करता है। मूल रूप से यह मानवतावाद का परोक्ष समर्थन ही है। उनकी क्रांतिकारिता में मानवतावाद परोक्ष रूप से विद्यमान दिखाई देता है, क्योंकि उस समय की ब्रिटिश शोषणवादी पद्धति में मानवीयता तथा मानव गरिमा को हाशिए पर ही रखा गया था। इसके समांतर ही ''प्रारंभ में उन पर स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ तथा महर्षि दयानंद सरस्वती का यत्किंचित प्रभाव पड़ा था।'' यह तीनों ही विचारक मानव गरिमा के पुर्नस्थापकों के रूप में पहचाने जाते हैं और सुधी पाठक स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं कि युवा राय के विचारों पर इनका प्रभाव वस्तुतः मानव गरिमा और प्रतिष्ठा की पुनःस्थापना का ही प्रतिबिंब माना जा सकता है।

''विवेकानंद भारत के पहले विचारक थे जिन्होंने भारतीय इतिहास की समाजशास्त्रीय दृष्टि से यथार्थवादी व्याख्या की। उन्होंने राजनीतिक उथल–पुथल व प्रलयकारी विप्लवों के मूल में सामाजिक संघर्षों का निरंतर सूत्र ढूंढ निकाला।'' युवावस्था में वह अरबिंदो के विचारों से भी जबरदस्त प्रभावित हैं और मानव गरिमा तथा प्रतिष्ठा को वे अपने चिंतन में स्पष्ट प्राथमिकता दे रहे हैं। अरबिंदो ने अपने दर्शन में यह स्पष्ट किया है कि उदारवाद व समाजवाद दोनों ही वैचारिक ध्रुवों में कुछ तत्व सामान्य है। हालांकि रणनीतिक व क्रियात्मक स्तर पर कुछ अंतर है। ''वैयक्तिक अस्तित्व, स्वतंत्रता, न्याय एवं हितरक्षण के उद्देश्य से सामूहिक हितों की प्राथमिकता ही समग्र स्वतंत्रता के अधिकार की वैधता है। व्यक्ति द्वारा समूह के हितों के सम्मुख (स्वहितों की रक्षार्थ) इस समर्पण एवं प्रतिवेदन में प्राप्ति के विषय को लेकर ही अस्तित्ववादी एवं समाज को प्रमुख मानने वाले विचारकों तथा कर्मण्यवादियों में भिन्नता

रही है। दोनों के द्वारा समानता–स्वतंत्रता एवं बंधुत्व के आधारभूत मूल्यों से अनुप्राणित होकर समाज के पुनःनिर्माण के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता रहा है।'' उनकी विचार श्रंखला में अनेक तत्वों नें उन्हें प्रभावित किया और इसमें कोई संदेह नहीं कि समाजवाद तथा वैज्ञानिक चिंतन ने उन्हें सर्वाधिक प्रभावित किया। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि उनकी युवावस्था में वे मार्क्सवाद से बड़े प्रभावित रहे, लेकिन यह उनकी तार्किकता तथा मौलिकता का प्रतीक माना जाएगा कि उन्होंने भारत के संदर्भ में मार्क्सवाद को वर्तमान 'कट पेस्ट के सिद्धांत' के आधार पर स्वीकार नहीं किया।

''मानवेंद्र नाथ राय का राजनीतिक दर्शन पूर्णतया वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित है। उन्होंने अध्यात्मवाद, भौतिकवाद तथा समाजवाद तीनों का सांगोपांग अध्ययन कर उनकी उपादेयता अथवा निःसार्थकता सिद्ध करते हुए मानववाद को नवीन रूप में प्रस्तुत किया है।'' भौतिकवाद से अत्यंत प्रभावित होने के बावजूद भी वे मानवीय विवेक और उसकी स्वतंत्रता के स्पष्ट पक्षधर थे। उन्होंने कभी भी मनुष्य को एक मशीन के रूप में स्वीकार नहीं किया। मार्क्सवाद से पूरी तरह सहमति ना होने का एक बड़ा कारण यह भी रहा। यहां यह स्पष्ट करना बड़ा आवश्यक है कि प्राचीन भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के बावजूद भी राय चार्वाक, कपिल तथा कणाद दर्शन से बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं थे। उनकी मान्यता थी कि भारतीय आध्यात्मिक चिंतन अंततः पराभौतिकता की ओर मुड़ जाता है और यह यथास्थितिवाद को प्रोत्साहित करता है। विशेष तौर से पूर्वजन्म की व्याख्या तथा नियतिवाद की अवधारणा मनुष्य को वैज्ञानिक चिंतन तथा स्वतंत्रता दोनों से परोक्ष रूप से दूर ले जाती है। उनकी भौतिकवाद की अवधारणा पश्चिम के विचारकों से अधिक प्रभावित थी। वह यूनानी दार्शनिक हेराक्लीटस से बड़े प्रभावित थे। उनका यह कथन कि ''साधारण सत्य है असाधारण असत्य है तथा जो मानवीय मस्तिष्क से परे है वह सत्य नहीं किंतु स्वप्न है ज्ञान नहीं किंतु केवल भ्रम है।'' के वे पूर्ण समर्थक थे। इसके समांतर ही वह प्रोटोगोरस से बेहद प्रभावित थे। ''प्रोटोगोरस का यह संदेश कि मनुष्य ही सब वस्तुओं का मापदंड है, राय के लिए ज्ञानदीप था।'' इस समय अवधि में वह मार्क्सवाद से रंगे हुए हैं लेकिन फिर भी कुछ मूल बिंदुओं पर उनकी असहमति स्पष्ट है। यही अवधारणा उन्हें औरों से पृथक करती है कि वह भौतिकवाद के बिंदु पर मार्क्सवाद के मशीनी समर्थक होने के स्थान पर मानवतावाद के पक्ष में प्रबलता के साथ खड़े रहे। लेनिन, स्टालिन तथा ट्रॉटास्की जैसे घोर यथार्थवादी विचारकों के सघन संपर्क के बावजूद उन्होंने अपने भौतिकवादी दर्शन में मानवतावाद को सर्वोच्च स्थान दिया। ''वह सत्यवादी थे तथा उन्होनें मैकियावैली के विपरीत अपने भौतिकवादी दर्शन में भी मानवीय कोमल भावनाओं को जीवित रखा। स्वार्थपरायणता का त्याग प्रस्तुत कर उन्होंने आर्थिक मानव के स्थान पर नैतिक मानव को प्रतिष्ठित किया।'' उनके विचार दर्शन में भौतिकवाद निर्णायक अवश्य रहा है लेकिन इसके समांतर ही वे मानव की गरिमा तथा सृजनजीलता को सदैव उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करते रहे। यहां वे भौतिकवाद को मानवतावाद से मिलाकर एक नवीन मौलिक अवधारणा को निर्मित करते हैं। ''वह समस्त विचारों का भौतिक अस्तित्व से संबंध मानते हैं।'' यहां पर उनकी विचार यात्रा में एक नवीन कोण प्रविष्ट होता है, जब 1915 में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटकर आते हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने गांधी के इस आगमन का स्वागत किया और यह कहना भी अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि गांधी के भारत आगमन के पश्चात् कांग्रेस की राजनीति व रणनीति दोनों में गंभीर बदलाव आए। इस समय एम. एन. राय मार्क्सवाद के रंग में रंगे हुए हैं तथा कांग्रेस और उसके कार्यक्रमों के प्रति उनका रवैया बहुत सकारात्मक नहीं था। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वैचारिक आधारों को बड़ा ढुलमुल और कमजोर मानते थे। उनकी स्पष्ट अवधारणा थी कि कांग्रेस के पास कोई ठोस वैचारिक आधार व कार्यक्रम नहीं है तथा सभी को साथ लेकर चलने के उसके प्रयास मूलतः बुर्जुआवाद को ही प्रोत्साहित करते हैं। हालांकि अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत में वे बंगाल में कांग्रेस के गरमपंथी वर्ग के प्रतिनिधियों से बड़े प्रभावित रहे। उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन की प्रशंसा की। गांधी को एक विशिष्ट संत के रूप में स्वीकारा लेकिन वैचारिक रूप से उन्होंने असहयोग आंदोलन के कई कार्यक्रमों पर संदेह भी व्यक्त किया।

''कालांतर में राय ने गांधीवाद को सामाजिक समन्वय के अव्यवहारिक आदर्श का प्रतिपादन करने वाला प्रतिक्रियावादी दर्शन बताया। राय ने माना कि अहिंसा क्रूर सामाजिक शोषण की यथार्थस्थिति को छिपाने का एक

आवरण है। गांधीवादी अहिंसा को देश की पूंजीवादी शोषण व्यवस्था के वृत में छिपाने का प्रच्छन्न बौद्धिक साधन माना। राय की मान्यता थी कि गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस एक चरखा संघ का रूप लेती जा रही थी।'' लेकिन इस आलोचना का यदि गहन विश्लेषण करें तो एक तथ्य उभरकर सामने आता है कि राय मानवतावाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत कर रहे हैं। उनका यह विश्लेषण कि गांधी सामाजिक समन्वय के प्रतीक के रूप में एक दर्शन को निर्मित करने की कोशिश तो कर रहे हैं लेकिन भारत के बहुसंख्यक गरीब समाज के लिए यह इंतजार तथा समन्वय बहुत लंबा हो सकता है। इसके अलावा वे इसकी सफलता को लेकर ज्यादा आश्वस्त भी नहीं थे। मूलतः यह अवधारणा उनके मानव गरिमा तथा स्वतंत्रता की पूर्ण स्थापना के लिए किसी भी किस्म के समझौते से मुक्त होने का द्योतक थी। वैचारिक दायरे पृथक होने के बावजूद भी ऐसा कहा जा सकता है कि गांधी जी ने सत्य पर आधारित अहिंसक नैतिक मूल्यों के आधार पर मानवतावादी आग्रहों को निर्मित करने का प्रयास किया तो उसके समांतर ही एम.एन. राय ने वैज्ञानिक समाजवादी तथा क्रांतिकारी विचारों को परिष्कार कर उन्हें मानवतावाद से संबंधित करने का निरपेक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया।

एम.एन. रॉय के विचारों का सबसे बड़ा योगदान यह माना जा सकता है कि उन्होंने लेनिन की ''मार्क्सवाद की तुलना स्टील की गेंद से करने वाली अवधारणा'' को आंशिक रूप से नकारते हुए उसमें भी मानवीय आधार पर संशोधन करने के प्रयास किए। यदि हम मार्क्सवादी विचारकों का विश्लेषण करें तो पाते हैं की बिरले ही हुए हैं जिन्होंने मार्क्सवाद से असहमति व्यक्त की हो, राय उनमें से एक हैं। ''राय नें ही मार्क्सवाद में अनेक संशोधन किए जैसे मार्क्सवाद किसी वर्ग विशेष से नहीं अपितु संपूर्ण मानव जाति से संबद्ध है, मार्क्सवाद विवेकवादी विचारों की उत्पत्ति है ना कि वर्ग विशेष की विचारधारा की। इस रुप में मार्क्सवाद को मूलतः विचार माना गया ना कि सिद्धांत। राय ने मार्क्सवाद को सामाजिक परिवर्तन के अनुकूल परिवर्तनीय मानकर ही उसकी संगति को स्वीकारा।"

वास्तव में 1917 से 1946 तक की उनकी विचार यात्रा बड़ी दिलचस्प है। इस अवधि में वे विचारों के मोह में पड़ भी रहे हैं और उनका मोहभंग भी हो रहा है। वह मार्क्सवादी क्रांतिकारी, रूढ़िवादी मार्क्सवादी, संशोधनवादी, एक सुधारवादी कांग्रेसी, उग्र लोकतांत्रिक विचारक रहे और इन सभी के मध्य मानव गरिमा तथा स्वतंत्रता की प्राण प्रतिष्ठा को स्थिर नहीं देख पाए।

संतोष व असंतोष के मध्य झूलते उनके विचार अंत में उग्रमानवतावाद पर जाकर स्थिर हुए। यह उनकी विचार यात्रा का तीसरा व अंतिम चरण स्वीकारा जाता है, जिसे 1947 से 1957 के मध्य आँका जाता है। इस समय अवधि में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। भारत स्वतंत्रता प्राप्त कर रहा है, कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के मध्य विवाद का अंत देश के विभाजन के रूप में हो रहा है और कांग्रेस के भीतर भी अनेक विचारद्वन्द जारी हैं। इस समय वे स्पष्ट रूप से इस तर्क के समर्थक हो चुके हैं की मानव गरिमा तथा मानव की मुक्ति ही प्रत्येक विचारधारा की परिणति होनी चाहिए, लेकिन किसी एक विचारधारा के प्रति बगैर किसी संशोधन के प्रतिबद्धित होने की स्थिति में यह संभव नहीं है। उनका नव मानवतावाद मूल रूप से मार्क्सवाद का दोषमुक्तिकरण है। मनुष्य के स्वभाव में विवेकशीलता, नैतिकता तथा स्वतंत्रता को पहचानने वाले एम.एन. राय की मानवतावाद की परिणति अंततः मनुष्य की मुक्ति का स्पष्ट घोषणा पत्र है जिसके लिए वह जीवन भर संघर्षशील रहे और उनका सर्वोच्च योगदान यह माना जा सकता है कि अपने मूल विचार से वे कभी भटके नहीं। बड़ी बहादुरी से वे प्रचलित धाराओं के खिलाफ तैरे और मानव की गरिमा, विवेकशीलता और स्वतंत्रता पर कभी भी कोई समझौता नहीं किया।

fu"d"k

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि एम.एन.रॉय की वैचारिक यात्रा उनकी जीवन गति के समानांतर चलती है। युवा रॉय असमानता की भावना, मानव गरिमा को उचित सम्मान ना मिलना तथा स्वतंत्रता का विशिष्टवर्गीय आवंटन से क्रांतिकारिता के प्रति उत्साहित होता है, वही विवेकानंद आदि मनीषियों से प्रभावित हो कर मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रति आकर्षित होता है। उसे वर्ग–संघर्ष के मूल में मानवीय हितों के टकराव दिखते हैं। एम.एन रॉय मनुष्य को एक मशीन के रूप में स्वीकार नहीं कर सके और यही मार्क्सवाद से पूरी तरह सहमति ना होने का मूल

है। उन्होंने मानव की गरिमा तथा सृजनशीलता को सदैव उच्च स्थान पर रखा। राजनीतिक कार्यक्रमों में भी अगर मात्र मानव के संघर्ष और अस्तित्व का स्थान नहीं दिया जा रहा तो वो उनके लिए अनुपयोगी ही है। इसी कारण से कार्यक्रमविहीन कांग्रेस को वह चरखा संघ समझते हैं। अध्यात्मवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद इन सबसे मानवीय सरोकारों और मूल्यों को समेट व इनका संशोधन एवं परिवर्धन कर नवमानवतावाद के रूप में एम.एन रॉय एक परिष्कृत रूप सामने लेकर आते हैं।

lanHk lph

1. आर्शीवादम एडी, मिश्र कृष्णकांत, *राजनीति विज्ञान,* एस चंद एंड कंपनी, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ–5,6।
2. आर्शीवादम एडी, मिश्र कृष्णकांत, *राजनीति विज्ञान,* एस चंद एंड कंपनी, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ–09।
3. राय एम.एन., *न्यू ओरियंटेशन,* रेनेंसा पब्लिशर्स, कलकत्ता, 1946, पृष्ठ–92।
4. वर्मा वी.पी., *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन,* लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा, 2003, पृष्ठ–549।
5. द कंपलीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानंद, अद्वेत आश्रम कोलकाता, 2016, पृष्ठ–394, 395।
6. अरविंदो, *द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी,* न्यूयॉर्क, 1950, पृष्ठ–313,314।
7. नागर पुरुषोत्तम, *आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन,* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2009, पृष्ठ–536।
8. नागर पुरुषोत्तम, *आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन,* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2009, पृष्ठ–537।
9. नागर पुरुषोत्तम, *आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन,* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2009, पृष्ठ–537।
10. राय मानवेंद्र नाथ, *पॉलिटिक्स पावर एंड पार्टीज,* रेनेंसा पब्लिशर्स कलकत्ता, 1960, पृष्ठ–30।
11. राय एम.एन., *वार एंड रिवॉल्यूशन,* रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी, 1942, पृष्ठ–107।
12. भारद्वाज कल्पना, *महात्मा गांधी और एम.एन. राय–तुलनात्मक अध्ययन,* पोइंटर पब्लिशर्स जयपुर, 2010, पृष्ठ–27।

****